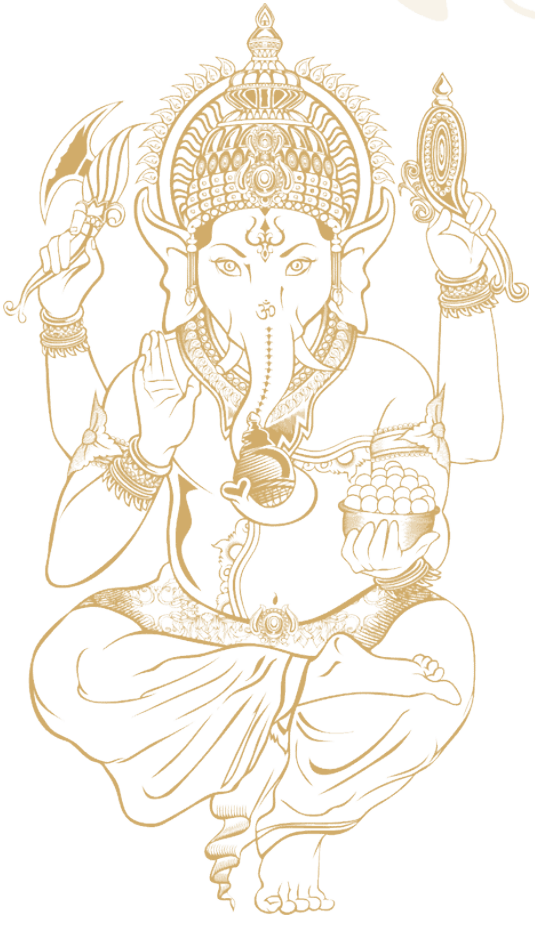

Mr.sanidhya rathore

Ms.vishakha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119637102

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/07/2002	जन्म तिथि	3-04/08/2002
शनिवार	दिन	शनि-रविवार
घंटे 09:11:00	जन्म समय	05:15:00 घंटे
घटी 08:26:37	जन्म समय(घटी)	58:27:33 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Nawalgarh
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	27:51:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:18:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:28:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:48:21	सूर्योदय	05:52:29
19:18:05	सूर्यास्त	19:17:00
23:53:19	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:20

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
राहु 10वर्ष 9मा 0दि		23:23:00	सिंह	लग्न	कर्क	08:36:29	चन्द्र 5वर्ष 1मा 6दि	
गुरु		10:04:03	कर्क	सूर्य	कर्क	17:33:41	राहु	
26/04/2013		12:02:13	कुंभ	चंद्र	वृष	16:31:51	10/09/2014	
26/04/2029		14:46:33	कर्क	मंगल	कर्क	19:47:04	09/09/2032	
गुरु	15/06/2015	16:52:42	कर्क	बुध	सिंह	01:49:35	राहु	23/05/2017
शनि	26/12/2017	04:52:26	कर्क	गुरु	कर्क	06:36:46	गुरु	17/10/2019
बुध	02/04/2020	24:08:58	सिंह	शुक्र	कन्या	02:32:50	शनि	23/08/2022
केतु	09/03/2021	00:27:07	मिथु	शनि	मिथु	01:17:21	बुध	11/03/2025
शुक्र	08/11/2023	22:54:49	वृष व	राहु	वृष	22:32:19	केतु	30/03/2026
सूर्य	26/08/2024	22:54:49	वृश्चि व	केतु	वृश्चि	22:32:19	शुक्र	29/03/2029
चन्द्र	26/12/2025	03:52:59	कुंभ व	हर्ष व	कुंभ	03:35:44	सूर्य	21/02/2030
मंगल	02/12/2026	15:51:16	मक व	नेप व	मक	15:38:30	चन्द्र	23/08/2031
राहु	26/04/2029	21:14:56	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	21:08:38	मंगल	09/09/2032

लग्न-चलित

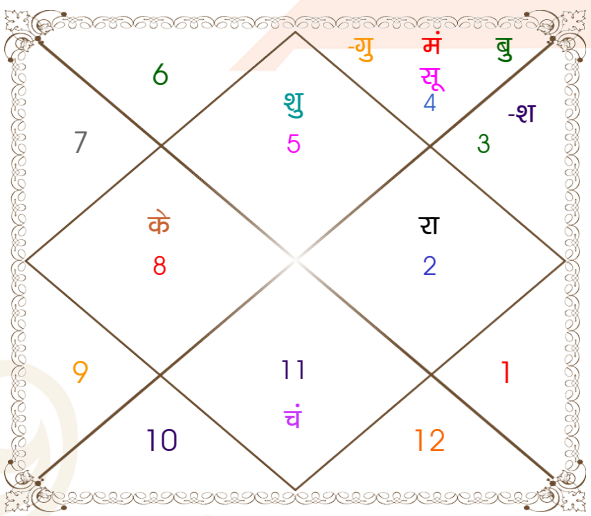

लग्न-चलित

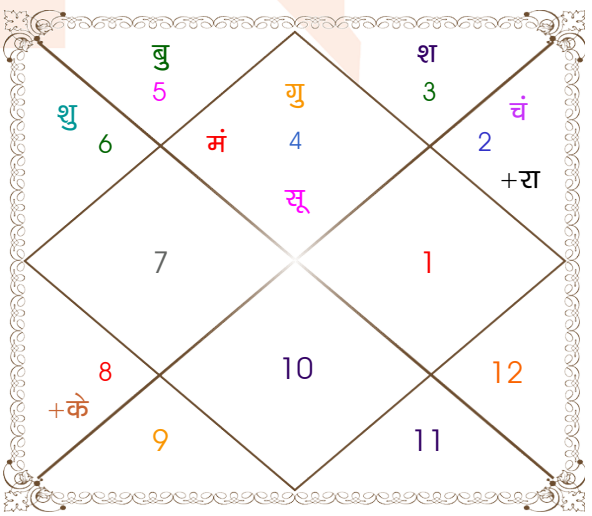

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

Mr.sanidhya rathore का वर्ग मेष है तथा डेण्अर्पीीं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.sanidhya rathore और डेण्अर्पीीं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.sanidhya rathore मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Mr.sanidhya rathore कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr.sanidhya rathore कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु Mr.sanidhya rathore कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्अर्पोंीं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्अर्पोंीं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेण्अर्पोंीं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

याभित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डेण्अर्पोंीं कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण्अर्पोंीं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों

में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr.sanidhya rathore कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.sanidhya rathore तथा डेण्अर्पोीं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।